निर्माण योजना
मथुरा
वितरण क्रं........
दिनांक ....

जीवन सम्पदा का स्वरूप और सदुपयोग

- श्रीराम शर्मा आचार्य

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

YUG NIRMAN YOJANA, GAYATRI TAPOBHUMI
MATHURA, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जीवन सम्पदा का स्वरुप और सदुपयोग

स्वभावतः मनुष्य जीवनकी आवश्यकतायें बड़ी सीमित और स्वल्प हैं। उपार्जन में भी वह सरल हैं। बुद्धिहीन और अनगढ़ काया वाले प्राणी शरीर यात्रा के साधन सरलता पूर्वक जुटा लेते हैं फिर कोई कारण नहीं कि विलक्षण काय-संरचना और अद्‌भुत बुद्धिमत्ता से सम्पन्न मनुष्य अपने निर्वाह में किसी कठिनाई का अनुभव करे। उदर पूर्ति के लिए अन्न, तन ढकने को वस्त्र और ऋतु प्रभाव से बचने के लिए आच्छादन जैसी कुछ ही आवश्यकताएं वास्तविक हैं. जिन्हें हंसते खेलते कुछ ही घंटों के प्रयास से हर कोई उपार्जित कर सकता है। न किसी के सामने अर्थ संकट होना चाहिए और न खिलाड़ी जैसी मनःस्थिति रखने वाले पर चिन्ता परेशानियों का भार लदना चाहिए। ईश्वर ने मनुष्य जीवन का उपहार, सुरदुर्लभ, अनुदान के रूप में प्रदान किया है, साथ ही उसके साथ उच्चस्तरीय उत्तरदायित्व लाद दिये हैं। स्पष्ट है कि बड़े पद या गौरव जिन्हें प्रदान किये जाते हैं, उन्हें बड़ी जिम्मेदारियों से भी लाद दिया जाता है। सेनापति का पद, दर्जा सम्मान, अधिकार, वेतन आदि अन्यान्यों से बढ़ा-चढ़ा होता है पर साथ ही उसके ऊपर जिम्मेदारियाँ भी इतनी अधिक होती हैं कि तनिक सा प्रमाद करने पर भी क्षम्य नहीं समझा जाता, वरन् कोर्ट मार्शल के निर्णयानुसार गोली से उड़ाया जाता है। सफाई कर्मचारी के प्रमाद की छोटी चेतावनी या प्रताड़ना से भर पाई हो जाती है, पर सेनापति को उतने भर से छुटकारा नहीं मिल सकता। कारण स्पष्ट है। सफाई कर्मचारी की लापरवाही से थोड़ी सी गंदगी बढ़ने भर की सीमित हानि होती है, किन्तु सेनापति की भूल से तो सारी सेना का ही नहीं पूरे देश का ही सर्वनाश हो सकता है। इसके विपरीत उसकी कुशलता एवं सूझ-बूझ के फलस्वरूप सारा देश सुरक्षित रह सकता है और समृद्धिवान वन सकता है। सेनापति को सम्मान, अधिकार, वेतन

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आदि का जो अनुदान मिलता है वह किसी का अनुग्रह नहीं वरन् सोंपी गई जिम्मेदारियों को ठीक तरह पालन कर सकने के लिए आवश्यक सुविधा भर है।

यही बात अन्यान्य उच्च अधिकारियों के सम्बन्ध में भी है। उन्हें कितने ही ऐसे साधन और सहायक मिलते हैं जो साधारण कर्मचारियों को उपलब्ध नहीं होते। इसमें किसी पक्षपात का आरोपण करने की आवश्यकता नहीं है।

मनुष्य जीवन की गरिमा न समझी जा सके तो उसे एक प्रकार से अभिशाप ही कहा जायेगा, क्योंकि वह अन्य प्राणियों की तुलना में अधिक रुग्ण, चिन्तित, उद्विग्न और समस्याओं से ग्रसित पाया जाता है। पग-पग पर दुर्गति भी उसी की होती है और मरणोत्तर जीवन में वही सबसे अधिक कष्ट सहता है। इसके विपरीत यदि कोई यह समझ सके कि उसे ईश्वर के वैभव भंडार का सर्वोपरि उपहार उपलब्ध है, इसके साथ असंख्य संभावनाएं अगणित विभूतियाँ जुड़ी हुई हैं तो उसके उत्साह का ठिकाना न रहेगा। साथ ही यह अनुभव भी होगा कि इतने बड़े पद का मिलना जहाँ अनुपम सौभाग्य है वहां उसके साथ जुड़े हुए उत्तरदायित्वों का भार भी कम नहीं है। मनुष्य जीवन ईश्वर का उपहार है,उसे सार्थक, सुखद और सफल बनाना मनुष्यका निजी उत्तरदायित्व है।

ईश्वर समदर्शी और न्यायकारी है; उसे न किसी से राग है न द्वेष, सभी को पात्रता में उत्तीर्ण अनुत्तीर्ण होने का अवसर वह क्रमानुसार देता है। स्कूली छात्रों में से जो उत्तीर्ण होते हैं वह अगले दर्जे में चढ़ जाते हैं। जो अधिक अच्छे नम्बर लाते हैं, वे छात्रवृत्ति पाते हैं इतना ही नहीं बड़े चुनावों में भी उन्ही को प्राथमिकता मिलती है। इसके विपरीत जो फेल होते रहते हैं वे साथियों में उपहासास्पद बनते, घरवालों की भर्त्सना सहते, आध्यापकों की आँखों में गिरते और आपना भविष्य अंधकारमय बनाते हैं। इसमें ईश्वर की विधि व्यवस्था को,अन्य किसी को कोसना व्यर्थ है। मनोयोग और परिश्रम में अस्त-व्यस्तता कर लेने से ही छात्रों को

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रगतिशीलता का वरदान अथवा अवमानना का अभिशाप सहना पड़ता है। यह बाहर से मिला हुआ सोचा तो जा सकता है पर असल में होता है स्व-उपार्जित ही। मनुष्य जीवन निस्संदेह सुर-दुर्लभ उपहार और इश्वरी वरदान है पर साथ ही यह भी ध्यान रखने की बात है कि उसका दुरुपयोग करना ऐसा अभिशाप भी है जिसकी प्रताड़ना मरने के उपरान्त नहीं तत्काल हाथों-हाथ सहनी पड़ती है।

यह एक प्रकट रहस्य है कि बोलने, सोचने कमाने, साधन जुटाने, घर बसाने, चिकित्सा, शिक्षा उपकरण, विज्ञान, वाहन शासन, बिजली आदि की जो सुविधाएं मनुष्य को मिली हैं वे सृष्टि के अन्य किसी प्राणी को नहीं मिलीं। अभ्यास में रहने के कारण इनका महत्व प्रतीत नहीं होता पर यदि उसे अन्य जीवों की आंख में बैठकर देखा जाए तो प्रतीत होगा कि स्वर्ग और देवता की सुविधा का जो वर्णन है, वह पूरी तरह मनुष्य पर लागू होता है। भगवान ने ऐसा पक्षपात क्यों किया कि अन्य प्राणी जिन सुविधाओं से वंचित रहे उन्हें मात्र मनुष्य को दिया गया ? मोटी दृष्टि से यह अन्याय या पक्षपात समझा जा सकता है किन्तु वास्तविकता कुछ दूसरी ही है जीवों में से लम्बी अवधि के उपरान्त हर किसी को यह अवसर मिलता है कि वह सुयोग का लाभ उठाये और अपनी इस पात्रता का परिचय दे कि वह बड़े अनुदानों को उन्हीं कामों में खर्च कर सकता है कि नहीं, जिनके लिए कि वे दिये गये थे। निश्चत रूप से वासना तृष्णा और अहंता की पूर्ति के लिए यह अनुदान किसी को भी नहीं मिला है। यह पशु प्रवृत्तियां हेय से हेय योनि में भली प्रकार पूरी होती रहती हैं। इन सुविधाओं के लिए ऐसा अनुदान देने की उसे कोई आवश्यकता न थी। मनुष्य जीवन तो विशुद्ध रूप से एक काम के लिए मिला है—"सृष्टा के विश्व उद्यान का भौतिक पक्ष समुन्नत और आत्मिक पक्ष सुसंस्कृत बनाने में हाथ बंटाने के लिए।"

शासनाध्यक्ष अपना सुविस्तृत कार्य अकेले नहीं संभाल पाते हैं इसके लिए सुयोग्य पार्षदों एवं अफसरों की सहायता से काम चलाना पड़ता है। मनुष्य की गणना ऐसे ही राजकुमारों में की गई है। उसे सृष्टा ने मात्र इस-

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

लिए विभूतियों से सम्पन्न बनाया है कि अपनी विशिष्ट प्रतिभा एवं क्षमता के सहारे इस विश्व उद्यान को अधिक समुन्नत और सुसंस्कृत बनाने में उसकी सहायता करें। सहायता वही कर सकता है जिसे उपयुक्त सुविधाएं उपलब्ध हों। इस दृष्टि से भगवान ने उसे ऐसी संरचना की काया प्रदान की है जैसी अन्य किसी प्राणी को नहीं मिली। ऐसी विलक्षण बुद्धि प्रतिभा दी है जिसका उदाहरण समस्त प्राणी समुदाय में अन्यत्र कहीं नहीं मिलता। इतनी प्रचुर साधन सामग्री प्रदान की है मानों सृष्टि सम्पदा का स्वामित्व ही उसे सौंप दिया गया हो। इसके अतिरिक्त पारस्परिक सहयोग सद्भाव का अनुदान मानवी समाज व्यवस्था के अनुरुप उसे मिलता रहता है। ऐसा आदान-प्रदान किसी अन्य समुदाय में नहीं मिलता। आनन्द केवल मनुष्य ही उठाता है। वात्सल्य की इतनी लम्बी और इतनी सरस शृंखला अन्यत्र मिल सकनी सम्भव नहीं। अभिभावकों और पूर्वजों के प्रति कृतज्ञता का प्रदर्शन कौन करता है? मात्र मनुष्य ही है जिसे कर्मठता-विचारणा-भावना जैसे प्रत्यक्ष दैवी वरदान मिले हैं, इसके लिए प्यार, करुणा उल्लास, उमंग, आनन्द, सेवा आत्मीयता उदारता जैसी भाव सवेदनाओं की एक दुनिया अनोखी है जिसका स्पर्श करके व्यक्ति कवि, कलाकार, दार्शनिक, योगी, और देवात्मा बनता है। इस सरसता के अमृत में डुबकी लगाकर वह अनुभव करता है कि अपनी काया वस्तुतः पंच तत्वों सेवनी धरती पर रहते हुए भी स्वर्गीय संवेदनाओं के भाव क्षेत्र में बिना पंख लगाये ही विचरण कर रही है। श्रद्धा और भक्ति ऐसे अनुदान हैं, जिसे निरन्तर बरसने वाले ईश्वरीय अनुदानों में बिना संकोच गिना जा सकता है। इसके अतिरिक्त उन दैवी सहायताओं को क्षेत्र अलग ही है जो समय-समय पर सत्प्रयोजनों के लिए कदम बढ़ाने वालों को मिलते रहते हैं। वे आश्चर्य जनक सफलताएं पाते हैं और सिद्धि सम्पन्न महामानव कहलाते हैं। अज्ञानग्रस्त आंखें यदि उसे न देख सकें तो उस क्षेत्र के लिए अन्य किसी प्राणी के शरीर में प्रवेश करके उसकी आंखों से यह परखा जा सकता है कि उसकी और मनुष्य की स्थिति में जमीन आसमान जैसा कितना बड़ा अन्तर है?

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

यह अन्तर न तो अकारण है और न पक्षपात युक्त। ईश्वर ने मनुष्य को प्राणि जगत में सबसे अधिक सज्जन और जिम्मेदार माना है और विश्वास किया है कि उसे जिस प्रयोजन के लिए अतिरिक्त साधन मिले हैं, वह ईमानदारी के साथ उसी में उन्हे प्रयुक्त करेगा। बड़ों की विशेषता एक ही होती है कि वे बेईमान नहीं होते। विशिष्ट उपयोग के लिए मिले साधनों का उपयोग वे स्वार्थ सिद्धि के लिए नहीं करते। ऐसा रहा होता तो खजाची अमीर बनने में मात्र एक घण्टे की हेराफेरी पर्याप्त होती। सेनाध्यक्ष शत्रु से मिलकर बादशाहत प्राप्त कर लेते। पर आमतौर से ऐसा होता नहीं। पिछड़े वर्ग के लोग अपनी क्षुद्रता और धूर्तता का परिचय देते रहते है पर संसार में एक वर्ग महानों का भी है। उन्हीं की विशेषताओं पर यह धरती टिकी हुई है और सृष्टि का व्यस्था क्रम चल रहा है।

मनुष्य जीवन अपने इस लोक की सर्वोपरि कही जाने वाली सम्पदा है। इसके दो ही उपयोग हैं आत्म कल्याण और विश्व कल्याण। आत्म कल्याण यह कि वे सदुद्देश्य में निरत रहकर आत्म संतोष, लोक सम्मान, दैवी अनुग्रह प्राप्त करते हुए पूर्णता का लक्ष्य प्राप्त करें। विश्व कल्याण यह है कि ईश्वर की इच्छा पूरी करें, सृष्टि में सद्भावनाएं और सत्प्रवृत्तियां बढ़ाने में प्रयत्नशील रहें। चिन्तन की उत्कृष्टता और व्यवहार की आदर्शवाविता ही वे तत्व हैं जिनके सहारे इस धरती की सुख शान्ति और प्रगति समृद्धि फलती फूलती है। यदि उन्हें निरस्त कर दिया जाए तो फिर पदार्थ वैभव कितना ही प्रचुर क्यों न हो मात्र विनाशकारी दुष्परिणाम ही उत्पन्न करेगा। मूल्य वैभव का नहीं उसके उपयोग का है। दुरुपयोग से तो अमृत भी विष बन जाता है।

यह जीवन के स्वरूप और सदुपयोग का चर्चा प्रसंग जागृत आत्माओं के सामने गीता बोध की तरह हैं। इसे विषम वेला में विशिष्ट प्रयोजन के लिए प्रस्तुत किया जा रहा है। इन दिनों युग संधि का पावन पर्व है। ऐसा पर्व जो लाखों वर्ष उपरान्त ही आता है। ऐसा पर्व जिसमें भगवान् स्वयं लीला सचार करते हैं और जागृतों को अपना सहचर बनाने का स्वर्ण सुयोग

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रदान करते हैं। इन दिनों मनुष्य जाति के महाविनाश या उज्ज्वल भविष्य का निर्धारण हो रहा है। इन दिनों जागरुकों के स्वल्प श्रम से ऐसा सुयोग पाने का अवसर मिल रहा है जैसा कि जन्म जन्मान्तरों तक योग तप करने वालों में से कदाचित ही किसी को मिलता है। जो समय की प्रकृति को जानते हैं वे यह भी समझते हैं कि सुयोग संयोग सदा नहीं आते वे बिजली की तरह कभी-कभी ही कौंधते और घटा की तरह कभी-कभी ही बरसते हैं, जो समय का लाभ उठा लेते हैं, वे अपने से हुई दूरदर्शिता को सराहते नहीं थकते।

युग संधि की इस पावन वेला में जो लोभ की हथकड़ी और मोह की बेड़ियां कुछ ढीली कर सकेंगे वे देखेंगे कि न व्यस्तता का बहाना ढूंढ़ना पड़ेगा और न चिन्ता, समस्याओं की दुहाई देनी पड़ेगी। निश्चिन्त इस दुनियां में एक भी नहीं है। मकड़ी के जाल बुनते रहने का कोई अन्त नहीं। उस व्यस्तता से कैसे छूटा जा सकता है, जो आवश्यकता की सहज पूर्ति होते रहने पर भी तृष्णा की खाई पाटने के लिए बुना गया है। यह खाई रावण, कंस हिरण्यकश्यप सिकन्दर नेपोलियन जैसे महा प्रतापियों से नहीं पटी तो बेचारे क्षुद्रजनों से उसे पूरा करना और व्यस्तता से छुटकारा पा सकना सम्भव ही कैसे हो सकता है?

निर्वाह की गुत्थी सुलझाने के ऐसे उपाय हैं। परिवार को सुसंस्कारी बनाने भर की आवश्यकता हो तो इसके ९९९ रास्ते हैं, पर यदि कुटुम्बियों को अपंग बनाकर बिठा देने और उन्हें स्वर्ण अलकारों से लादने का मन हो तो फिर कोल्हू के बैल की तरह हड्डियां निचोड़ने के अतिरिक्त दूसरा कोई चारा नहीं है। तब उतने से भी काम चलने वाला—नहीं है। आत्मा और ईमान को भी उसी कोल्हू में पेलने के लिए अपनी समर्थता के साथ-साथ ही डालना पड़ेगा। इतने पर भी कहा नहीं जा सकता कि इतने भर से 'राधा का नाच' ठन सकने लायक 'नौ मन तेल' जुट पायेगा या नहीं।

परिवार के सब लोग मिल जुलकर परिश्रम करें। संचित पूंजी को भूमि में गाढ़ने के स्थान पर उसी की हेरा-फेरी करें तो लालच घट सकता है,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जो अर्थ संकट बनकर राक्षस की तरह मुंह बांधे खड़ा रहता है। सादगी और मितव्ययता अपनाने पर प्रायः आधे खर्च की कटौती हो जाती है। संचित पूंजी समर्थ उत्तराधिकारियों को मिलनी चाहिए यह प्रकार कानूनी तो हो सकती है। पर उसमें नैतिकता और आध्यात्मिकता का रत्ती भर भी पुट नहीं है। जो संचय सन्तान को समर्थ बनाने के अति रिक्त बच जाता है वह न्याय और विवेक की दृष्टि से विशुद्ध समाज सम्पदा है। प्रजा तन्त्री सरकारें मृत्युकर कड़ा कर रही हैं। श्राद्ध आर्थात् पूर्वजों की संचित सम्पदा का सत्प्रयोजनों के लिए नियोजन। साम्यवाद इस सन्दर्भ में और भी अनावश्यक संचय को बल पूर्वक समाज सम्पदा के रूप में अधिकृत करने के लिए कृत संकल्प है। किसी भी न्याय कसौटी पर पूर्वजों की संचित सम्पदा के लिए समर्थ उत्तराधिकारी अपना अधिकार नहीं जता सकते। सच तो यह है उनने शिक्षा, पोषण, विवाह, व्यवसाय आदि माध्यम से पूर्वजों का जो ऋण अर्जित किया है उसे उन्हें वृद्धावस्था की सेवा सुविधा में अथवा उनके यश पुण्य की वृद्धि में वापस करने का निश्चय करना चाहिए। यदि वे आना-कानी करें तो उन्हें नैतिक दबाव से इसके लिए बाधित किया जाना चाहिए। बच्चों को शिक्षित, स्वावलम्बी, सुसंस्कारी बनाना तो अभिभावकों का कर्तव्य है पर इस प्रचलन का तनिक भी औचित्य नहीं है कि समर्थों को पूर्वजों की सम्पदा का उपभोग हरामियों की तरह करने का अवसर मिले।

पर कुछ मौलिक प्रश्न हैं जिन्हें जीवन सम्पदा का सदुपयोग करने की बात सोचने वाले यदि समय रहते अपने दृष्टिकोण में समाविष्ट कर लें तो किसी को भी उस दबाव में पिसना न पड़ेगा जो व्यस्तता, चिन्ता, समस्या आदि के नाम से जन जन पर छाया हुआ है तथ्यतः किसी के सामने कोई ऐसी समस्या नहीं है जिसके कारण इन दिनों दिग दिगन्त में गूंज रहे महाकाल की प्रेरणा-युग साधना और समय की पुकार की अवहेलना करते हुए आत्म प्रताड़ना सही जाय और इतिहास कारों की काया-कलंकियों की सूची में अपने नाम का उल्लेख करने दिया जाए।

क्र० ६५-प्र० युग निर्माण योजना, मु० युग निर्माण प्रेस, मथुरा। मूल्य ४० पैसा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org